अनुक्रम

1. संत ब्रह्मानंद सरस्वती का सामाजिक समरसता में योगदान — 7
   डॉ. बाबू राम (डी.लिट्.)

2. फणीश्वरनाथ रेणु का कथेतर गद्य (संदर्भ : रेणु के 'पत्र') — 15
   प्रो. श्रवणकुमार मीना

3. छायावादी वृहत्त्रयी के महादेव : निराला — 22
   डॉ. भूपेश

4. समीक्षण का सजल बिंब — 32
   कृष्ण बिहारी पाठक

5. गढ़वाली लोकगीतों की भाषा एवं शिल्प — 40
   नवीन चंद्र

6. अनकहा सच : किन्नर समाज़ (लघुकथाओं के विशेष संदर्भ में) — 54
   पूजा व्यास

7. हिंदी साहित्येतिहास में लोकभाषाएँ — 60
   डॉ. प्रभात कुमार मिश्र

8. समकालीन हिंदी कविता में आदिवासी विमर्श — 73
   डॉ. रश्मि रवींद्रन

9. प्रवासी महिला कथाकार सुधा ओम ढींगरा के कथा साहित्य में संवेदना — 80
   रेणु वर्मा

10. इक्कीसवीं सदी और हाशिए पर छूटे भारत के जन : 'एक देश बारह दुनिया' के बहाने — 85
    डॉ. संध्या कुमारी सिंह

11. सूरजपाल चौहान की कविता और संवैधानिक मूल्य 92
डॉ. संजय रणखांबे

12. साहित्य और संस्कृति का अंतर्संबंध : समकालीन कविता के विशेष संदर्भ में 99
डॉ. सरस्वती जोशी

13. केदारनाथ सिंह का दूसरा घर : कुछ अनजाने पहलू 109
डॉ. स्नेहा सिंह

14. भारत के किसान की तस्वीर (मधु कांकरिया के उपन्यास 'ढलती साँझ का सूरज' के विशेष संदर्भ में) 115
श्रीमती वर्षा सिखवाल

15. उत्तर-आधुनिकता की समाजशास्त्रीय शक्ति 123
डॉ. विनोद कुमार विश्वकर्मा

16. राजस्थान में आधुनिक रंगमंच का उद्‌भव 134
बलदेवा राम

17. पर के लिए स्वयं के विसर्जन का भाव : 'महासागर' 144
डॉ. नवीन नंदवाना

पर के लिए स्वयं के विसर्जन का भाव : 'महासागर'

डॉ. नवीन नंदवाना*

समकालीन हिंदी उपन्यासों में विमर्शों की गूँज-अनुगूँज सुनाई पड़ती है। इन उपन्यासों में रचनाकारों ने आदिवासी समाज, उनके जीवन-संघर्ष और संस्कृति का रेखांकन किया है। हिंदी के कई ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने देश के विविध हिस्सों में निवासरत जनजातियों के जीवन को आधार बनाकर लेखन किया है। ऐसे ही लेखन में हम हिमांशु जोशी द्वारा रचित 'महासागर' उपन्यास को पाते हैं।

हिमांशु जोशी का जन्म 04 मई, 1935 को अल्मोड़ा जिले के जोस्यूडा गाँव में हुआ। हिमांशु जोशी ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। 'अरण्य', 'कगार की आग', 'सु-राज', 'महासागर', 'समय साक्षी है', 'छाया मत छूना मन', 'तुम्हारे लिए' आदि उपन्यासों की रचना की। जोशी जी ने 'अंतत:', 'रथचक्र', 'मनुष्य चिह्न', 'जलते हुए डैन' और 'तपस्या तथा अन्य कहानियाँ' शीर्षक से कहानी संग्रहों की रचना की। 'अग्निसंभवा', 'नील नदी का वृक्ष' और 'एक आँख की कविता' आपके द्वारा रचित कविता संग्रह हैं वहीं 'यात्राएँ' शीर्षक से आपने यात्रा-वृत्तांत संग्रह की रचना की है। 'छाया मत छूना मन', 'अरण्य', 'मनुष्य चिह्न', 'श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ' तथा 'गंधर्व कथा', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत हैं। वहीं 'हिमांशु जोशी की कहानियाँ' तथा 'भारत रत्न : पं. गोविन्द वल्लभ पंत' को

* सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001

हिंदी अकादमी, दिल्ली का सम्मान दिया गया। राजभाषा विभाग बिहार सरकार द्वारा उनकी 'तीन तारे' रचना को भी पुरस्कृत किया गया। साथ ही उन्हें पत्रकारिता के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हिंदी का यह श्रेष्ठ रचनाकार 23 नवंबर, 2018 को दुनिया को अलविदा कह गया। ऐसे श्रेष्ठ रचनाकार के निधन पर जयप्रकाश पांडेय ने लिखा है कि- ''हिंदी के मशहूर कथाकार हिमांशु जोशी का निधन हो गया। उनके निधन के साथ ही पहाड़ के लेखकों की बेहद स्थापित पीढ़ी में से एक और नाम कम हो गया। हिमांशु, मानव संवेदनाओं के लेखक थे। उनके उपन्यास और कहानियाँ, कहानी होते हुए भी सच लगती हैं। त्याग, तपश्चर्या, विस्थापन, परिवार, करुणा, संघर्ष, शोषण, स्नेह, वासना, तिरस्कार के कई रंगों से रंगी उनकी रचनाएँ केवल कल्पना पटल पर नहीं यथार्थ का चित्रण भी थीं।''[1]

'महासागर' उपन्यास के माध्यम से रचनाकार ने निम्न-मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष और महानगरीय जीवन के साथ-साथ महासागर के बीच अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों पर निवासरत आदिवासी लोगों के दर्द की कथा को अभिव्यक्ति प्रदान की है। अंडमान-निकोबार क्षेत्र में मुख्य रूप से आदिवासी समुदाय की दुर्लभ जनजातियाँ पाई जाती हैं। इन जनजातियों में जारवा, ग्रेट अंडमानीज, शोम्पेन, नॉर्थ सेंटीनेलेज और ओंग समूह की जनजातियाँ हैं। ''हिमांश जोशी के साहित्य में जीवन की व्यापकता के चित्रण का फलक बहुत विस्तृत है। उनका समग्र साहित्य मनुष्य की समस्याओं से प्रेरित है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में पर्वतीय ग्राम्य जीवन, मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन और महानगरीय जीवन, तीनों की स्थितियों और विसंगतियों का चित्रण किया है। कथा साहित्य हो या यात्रा-वृत्तांत, सभी जगह हिमांशु जोशी ने गाँव, कस्बे और नगर के व्यक्ति को केंद्र में रखा है। सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक घटनाएँ जीवन के विविध संदर्भों से जुड़कर हिमांशु जोशी के साहित्यिक विजन को प्रासंगिक बना देती है। इस स्तर पर पहुँचकर ही इनकी रचनाएँ समाज, इतिहास, दर्शन का एक यथार्थ दस्तावेज बन जाती हैं। इन्होंने अपनी कृतियों में जिस भी वर्ग, प्रांत, व्यक्ति, वातावरण का चित्रण किया है, प्राय: वे अपनी सामाजिक चेतना, दर्शन, दृष्टि, अनुभूति, संवेदना, पक्षधरता और जीवंत भाषा-शैली जैसे गुणों के आपस में सुंदर समन्वय के कारण, सजीव बन पड़ी हैं। हिमांशु जोशी की एक खास प्रवृत्ति यह है कि वे किसी भी प्रसंग, घटना, इतिहास में पूरी आत्मीयता से जुड़ जाते हैं, और उनकी यह रचना-प्रक्रिया, उनके समग्र साहित्य में दिखलाई पड़ती है।''[2]

'महासागर' उपन्यास की भूमिका के रूप में 'दो शब्द' लिखते हुए हिमांशु जोशी लिखते हैं कि- ''कुछ घटनाओं को निकट से देखा, कुछ व्यक्तियों को निकट से परखा। साकेत, दीप, छाया, नीना- सभी पात्र किसी-न-किसी रूप में मेरे चारों ओर बिखरे रहे। उन सबको सहेजकर, यहाँ एकत्रित करने भर का प्रयास मैंने किया है। जो रचना जीवन के जितना निकट रहती है, वह उतनी ही स्वाभाविक होती है- शुरू से ही मेरी यह मान्यता रही है। इसलिए जहाँ तक बन सका, 'करिश्मा' दिखाने से मैं सदैव बचता रहा हूँ।''[3]

उपन्यास का आरंभ ही जीवन संघर्ष से होता दिखाई पड़ता है। साकेत जो इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र है, उसके कथनों में हमें एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार का संघर्ष दिखाई देता है। उपन्यासकार वर्णन करता है कि रूप किसी तरह से एक ही साड़ी से गुजारा कर रही है। अन्नी को पिकनिक भेजने के पैसे नहीं है। छाया की आँखें खराब हैं, उसके इलाज की राशि भी नहीं जुट पा रही है। इस प्रकार से ये सब स्थितियाँ एक परिवार के कठिन समय के संघर्ष को दर्शाती है। रोटी के लिए कितनी पीड़ा है, उसे हम इस कथन से समझ सकते हैं- ''कुछ नहीं। उसने केवल सिर हिलाया। तुमने मारा होगा? उसने प्यार से डपटकर कहा। रूप कुछ उत्तर दे, उससे पहले दीवार के सहारे खड़ी छाया बोल पड़ी- अम्मी ने मारा, दद्दा। 'क्यों?' 'रोटी माँगता था।' तो दे दो! इसमें रोने की क्या बात है? किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। सब चुपचाप उसकी आकृति की ओर देखते रहे तो वह कुछ सहम-सा गया। उसका हाथ ठोढ़ी पर टिका। माथे पर किंचित् बल पड़ा। होंठों को जीभ की नोक से भिगोता हुआ बोला, राशन खत्म हो गया क्या- रूप इस बार भी चुप बोली नहीं। साकेत के पाँव जहाँ पर थे, वहीं पर इस्पात की तरह जम गए। रात का भोजन वह स्वयं इधर-उधर कहीं ले लेता है। कल रात जब वह देर से लौटा तो सब सो चुके थे। चूल्हा बुझ गया था। कल रात भी ऐसा ही शोरगुल था। कल रात भी छोटी माँ बड़ी बेरहमी से बच्चों को पीट रही थी।''[4] इतना सब सहने के बाद भी राशन की दुकान की ओर जाने की हिम्मत वह सिर्फ इसलिए नहीं जुटा पा रहा था क्योंकि राशन वाले का पिछला भी बकाया था। उपन्यास के ये कथन एक घर की टूटती आर्थिक स्थिति को भलीभाँति दर्शाते हैं।

उपन्यास की पात्र दीप दी नौकरी करती है और अपनी नौकरी के संघर्ष भी वह यत्र-तत्र बताती है। वह अपने ट्रांसफर की चिंता करते हुए साकेत से कहती है कि- ''शिशिर बाबू उसके ट्रांसफर पर तुले हैं। शिशिर बाबू पशु हैं। शिशिर बाबू 'मांसाहारी' पशु हैं ....और मनुष्य का मांस खाते हैं।''[5] उपन्यास के इस पात्र के कथन

से हम एक नौकरीपेशा स्त्री के साथ होने वाले शोषण का अनुमान लगा सकते हैं। दीप दी साकेत को उसके कल शाम के खाने के बारे में पूछती है और अनुमान लगाती है कि लगता है उसने सालों से खाना नहीं खाया। इस प्रकार के कथन जीवन के संघर्ष और यथार्थ को उद्घाटित करते हैं। किस प्रकार एक मजबूर युवा आर्थिक तंगी के चलते अपराध को स्वीकार करता है इस बात का अनुमान इस उपन्यास के सहारे लगाया जा सकता है। साकेत अपराध तो नहीं करता पर यह स्वीकार करता है कि- ''सोचता हूँ साल-छः महिने प्रैक्टिस कर जेब कतरना सीख लूँ, तो जिंदगी की एक बहुत बड़ी समस्या सुलझ जाएगी।''[6]

साकेत के जीवन संघर्ष को दीप दी देखती है और उसे कहीं-कहीं लगता है कि यह बच्चा घबराकर कुछ गलत न कर दे। पर वह साकेत की सच्ची मित्र है और समय-समय पर वह उसे जीवन का ज्ञान देती रहती है। साकेत भी उससे कुछ सीखता रहता है। एक बार जब दीप दी को लगता है कि वह कहीं घबराकर कुछ गलत न कर ले तो ऐसे में साकेत उसे आश्वासन देता है कि वह जीवन के संघर्षों का मुकाबला करेगा और कभी भी कोई गलत कदम नहीं उठाएगा। साकेत के संघर्षों को हम निम्नलिखित पंक्तियों से समझ सकते हैं- ''हौजरी में कितने घंटे काम करते हो? करीब छः घंटे। ट्यूशनें कितनी हैं? उतनी ही, जितनी पहले थीं। पढ़ाई ठीक चल रही है? हाँ, चल तो रही है कछुए की चाल से- कुछ-कुछ। सुबह से शाम तक तुम इतना काम करते हो, तो फिर सोते कब हो? बस, थोड़ा-सा खाते समय सो लेता हूँ, थोड़ा-सा चलते समय, थोड़ा-सा पढ़ते समय। साकेत दीप दी की ओर देखता है, क्यों, घूरकर देख रही हो? क्या मैं गलत कह रहा हूँ?''[7] साकेत के जीवन की भाग-दौड़ ऐसी है कि वह अपने लिए समय ही नहीं बचा पाता है। दीप दी के यह पूछने पर कि क्या उसे अकेलापन नहीं लगता? विवाह आदि के बारे में घर वाले क्या सोचते हैं? इन प्रश्नों के जवाब में साकेत जो कहता है, वह एक प्रकार से आज के भाग-दौड़ भरे यांत्रिक जीवन को दर्शाता है। साकेत साफ शब्दों में बताता है कि उसके पास अकेलापन महसूस करने के लिए समय ही नहीं बचता। साथ ही वह बताता है कि उसके माँ-बाप हैं नहीं और भाईयों के पास अपने व्यवसाय करने के अतिरिक्त समय ही नहीं है। अतः उसके बारे में कौन क्या सोचेगा।

जीवन की इसी आपाधापी में अर्थ और अध्ययन के बीच दौड़ता हुआ साकेत एक दिन कामयाबी हासिल कर लेता है। वह इंजीनियर बन जाता है। नियुक्ति पत्र मिलने के बाद सभी को एक मिटिंग के लिए बुलाया जाता है। कारण कि कोई भी उम्मीदवार कश्मीर-लद्दाख और अंडमान-निकोबार नहीं जाना चाहता है। इसी कारण

बूढ़े डायरेक्टर सभी को समझाते हैं- ''छड़ी की नोक अब नीचे की ओर मुड़ती है, 'यह हैं अंडमान-निकोबार!' बंगाल की खाड़ी की ओर वह इशारा करते हैं, 'कालापानी' के नाम से बदनाम इस जगह पर हमें नई आबादी बसानी है। यहाँ के बीहड़ वनों में नए रास्ते बनाने हैं। पूर्वी पाकिस्तान से आए कुछ बंगाली शरणार्थी यहाँ बस गए हैं, उन्हें वे सारी सुविधाएँ देनी हैं, जिनकी उन्हें जिंदा रहने के लिए ज़रूरत है। 'यह है हमारा समुद्री किनारा!' वह कलकत्ता से कन्याकुमारी तक एक लकीर खींचते हैं, तब तक असुरक्षित है, जब तक कि अंडमान की स्थिति मज़बूत नहीं हो जाती। अंडमान हमारा समुद्री किला है। यहाँ सड़कें चाहिए, पुल चाहिए, नई-नई हवाई पट्टियाँ और बंदरगाह चाहिए। हो सकता है बहुतों को यहाँ की आबोहवा पसंद न आए. और भी बहुत-सी कठिनाइयाँ हों। फिर भी अपने वतन के लिए हमें सब कुछ सहना होगा। इस बूढ़े भारत का भविष्य तुम नवयुवकों के हाथ में है। देश को तुम्हारी कुर्बानी की ज़रूरत है।' ....हमें केवल पाँच इंजीनियर चाहिए इस बैच से, 'एंड ओन्ली थ्री फॉर कश्मीर।' इन उम्मीदवारों को डायरेक्टर विशेष रूप से फिर बुलाते हैं। इनकी पीठ थपथपाते हैं। इन्हें आश्वासन देते हैं कि इन जगहों में इन्हें विशेष भत्ता मिलेगा। पाँच इन्क्रिमेंट्स एडवांस में। रहने-सहने की सारी सहूलियतें। विशेष डॉक्टरी सुविधा के अतिरिक्त आने-जाने का किराया सरकार का।''[8] साकेत की सादगी, व्यवहार और उत्साह से डायरेक्टर बहुत खुश होते हैं। वह पंद्रह दिन बाद अपने कार्य के लिए रवाना होता है।

उपन्यासकार हिमांशु जोशी ने अंडमान-निकोबार के आर्थिक-सामाजिक जीवन का जो वर्णन किया है। वह आजादी के तुरंत बाद के वहाँ के जीवन और सुविधाओं का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करने वाला है। मिस्टर वाधवानी और साकेत की चर्चा जहाँ एक ओर कथा को आगे बढ़ाती है, वहीं वाधवानी के कथन आज के युवा को देश और समाज के लिए कुछ करने का संकल्प भी दिलवाते हैं। ''ज़िंदगी में जीने के लिए किसी नशे की आवश्यकता होती है। वह नशा अगर किसी मिशन से यानी कि उद्देश्य से जुड़ा हो तो जीने में भी कुछ सुविधा हो जाती है। वे खाँसते हैं, मुझे ही देखो न! विवाह नहीं किया। आगे-पीछे कोई नहीं। फिर भी लगता है कि अकेला नहीं। एक बहुत 'बड़े परिवार' के लिए संघर्ष कर रहा हूँ। इसका भी अपना सुख है न!''[9] इसी प्रकार वाधवानी और साकेत की सेल्युलर जेल भ्रमण की यात्रा भी नए पक्षों को उद्घाटित करती है। वहाँ लगी शहीदों की सूची में साकेत अपने पिता का नाम भी देखता है- 'शहीद दिनमणि आजाद'। वाधवानी देश के वीर शहीदों की बलिदान गाथाओं का वर्णन करते हुए अब साकेत को इस बात का स्मरण करवाते हैं

कि अब उसे वहाँ के आदिवासियों के कल्याण का कार्य करना है। वे कहते हैं कि- ''हमें इन वीरान द्वीपों को आबाद करना है और यह तभी संभव हो सकता, जब सड़कें होंगी और पुल होंगे। जगह-जगह जेटियों का निर्माण भी होना है। इतनी दूर आकर बसने वाले इन अभागे शरणार्थियों को फिर यहाँ और नया कष्ट हो, यह अमानवीय होगा। हमें सारे कष्टों को परस्पर बाँटकर सहना है। इन दीन-हीन आदिवासियों को हमें अपने स्तर तक लाना है। जब तक देश का एक भी आदमी गरीब है, एक भी आदमी भूखा-नंगा है, तब तक हम सच्चे अर्थों में आज़ाद नहीं। हमारी आज़ादी अधूरी है।''[10] साकेत वहाँ के 'जारवा' आदिवासियों से भी संपर्क में आता है। वह वहाँ की जनजातियों के कल्याण के लिए अपने ज्ञान का उपयोग करता है। 'जारवा' आदिवासियों के बारे में कहा जाता है कि- ''जारवा जनजाति के आदिवासी अंडमान आइलैंड में साउथ और मिडिल में रहते हैं। माना जाता है ये इन टापुओं पर पिछले पाँच हजार सालों से रह रहे हैं और अफ्रीका से आकर बसे हैं। ये बाहरी दुनिया से दूर रहते हैं और अब भी हजारों साल पहले की तरह ही रहते हैं। अब भी अपने लिए तीर-धनुष से शिकार करते हैं और शिकार पर ही निर्भर रहते हैं। ...इनकी आबादी साल-दर-साल घटती आंकी गई है। जिसका अनुमान वर्तमान में 250 से 400 के बीच है। ...करीब 1990 तक ये लोग किसी की नज़रों में नहीं थे। कोई बाहरी व्यक्ति इनके दायरे में प्रवेश करता, तो उसे मार देते थे। 1998 के बाद इनके बर्ताव में बदलाव शुमार किया गया। ये 1998 में ही पहली बार बिना धनुष-बाण के अपने इलाके से बाहर आए। कई रिसर्चों में इन्हें विश्व की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक भी कहा गया है। माना जाता है इन्हें 150 से ज्यादा पेड़-पौधों और 250 से ज्यादा जानवरों की प्रजातियों का ज्ञान है। 1990 में वहाँ की स्थानीय सरकार ने, इन लोगों को घर बनाकर रहने की सुविधा दी थी लेकिन फिर भी कुछ ही लोग अपने क्षेत्र से बाहर आए।''[11]

साकेत को निकोबार के आदिवासी क्षेत्रों में भी काम करने का अवसर मिलता है। यहाँ के जनजीवन और सुविधाओं के विषय में उपन्यासकार ने लिखा है कि- ''दूर तक फैले भयानक जंगलों में कहीं कोई बस्ती नहीं। कहीं-कहीं 'वन-विभाग' का कार्य अवश्य कुछ चलता है। पास के छोटे-से द्वीप से इमारती लकड़ियों से लदे स्टीमर गुज़रते दिखलाई देते हैं। पूर्वी छोर के टापुओं में निकोबारी आदिवासी अवश्य बड़ी संख्या में रहते हैं, जो आदिकाल से चला आ रहा अपना स्वच्छंद जीवन जीते हैं। मछलियाँ मारने के अतिरिक्त कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं करते। साकेत जब यहाँ

आया तो उसे और भी विचित्र लगा, अंडमान में जो नाममात्र की सुविधाएँ थीं, वे भी यहाँ समाप्त हो गई थीं।''[12]

साकेत को एक स्त्री वहाँ रोते हुए दिखाई देती है। पता करने पर ज्ञात होता है कि जवाबदार (मेट) उसे मजदूरी नहीं दे रहा है। उपन्यास इस प्रकार के शोषण की बातें भी उठाता है- ''क्या बात है? वह उसके साथ-साथ चलता हुआ पूछता है। निकोबारी बताता है, जवाबदार मजदूरी के पूरे पैसे नहीं देता और कभी किसी ने कुछ कहा तो लाठी-पत्थर से मारता है। उस लड़की को पिछले महीने से अब तक आधी मज़दूरी भी नहीं मिली। कल इसने पत्थर से उसके सिर पर मारा। उसके बाल नोचे। 'लड़की अकेली है?' उसका बाप बूढ़ा, माँ, वह एक अंगुली खड़ी कर उसे धनुषाकार मोड़ता है, यह समझाने के लिए कि उसकी कमर झुकी है। फिर आँखों कानों की ओर इशारा करता है कि वह आँखों नहीं देखता, कानों से नहीं सुनता। फिर वह पेड़ के नीचे पड़े पत्थर की ओर इशारा कर चुप हो जाता है और कुछ सोचता हुआ समझता है कि कल से वे भूखे हैं।''[13] साकेत इन लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। वह जवाबदारों को मजदूरों से काम लेने के तौर-तरीके सिखाता है। सरकार के साथ संवाद कर मजदूरी बढ़वाता है। उनके लिए डिब्बा बंद दूध और मोबाइल डिस्पेंशरी आदि के भी इंतजाम कर उनके जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करता है।

सरकारी महकमे के लोग इन बाहरी दुनिया से दूर रहने वाले इन आदिवासियों का शोषण करते दिखाई पड़ते हैं तो साकेत को यह बिल्कुल भी उचित नहीं लगता है। वह अपने ही ऑवरसियर की खूब डाट लगाता है और इन लोगों के साथ भला व्यवहार करने और उनकी मेहनत का पूरा पैसा उन्हें देने की बात कर उनके हक में आवाज उठाता है। साकेत कहता है कि- ''लेकिन वेकिन क्या? अगर किसी भी मजदूर के साथ इस तरह के बर्ताव की शिकायत सुनी तो उसके लिए जिम्मेदार तुम लोग समझे जाओगे। तुम्हारी नौकरी पर आँच आएगी। वह कुछ ठहरकर फिर आगे कहता है, ...इन्हीं की मेहनत के बलबूते पर सारा काम चल रहा है। फिर इन्हीं पर अन्याय हो! कम-से-कम पूरा न्याय न भी हम कर सकें तो इनकी खून-पसीने की कमाई तो इन्हें दें। क्या तुम सोचते हो कि पेट पर पट्टी बाँधकर ये तुम्हारा काम करें!''[14]

उपन्यास में इन आदिवासियों के साथ हो रहे और प्रकार के छलावे को भी दिखाया गया है। बाहरी व्यापारियों द्वारा इन लोगों का शोषण किया जा रहा है, यह

देखकर भी साकेत को दुख होता है। व्यापारी इन भोले लोगों से सुपारी और नारियल को कम दाम या नमक के बदले ले लेते हैं। बाहरी व्यापारी अपनी चतुराई से तराजू में एक ओर सुपारी रखते हैं जो ये लोग इकट्ठा करके लाते हैं, बदले में दूसरी ओर नमक रखकर उन्हें उतने ही वजन का नमक दे देते हैं। यहाँ वे सुपारी और नमक की कीमत बराबर आँकते हैं और इन द्वीप समूहों के आदिवासियों को इसके यथार्थ का भान ही नहीं हो पाता है। अनपढ़ होने के कारण इन क्षेत्रों के आदिवासी लोग चिकित्सा प्रणाली पर पूरा विश्वास न कर तंत्र-मंत्र और टोने-टोटकों के माध्यम से बीमारियों से निजात चाहते हैं। उपन्यास में वर्णित है कि- ''फाया सूँघकर उसने फेंक दिया था, अर्दली कहता है, ये निकोबारी अंधविश्वासी होते हैं। प्रेतों की पूजा करते हैं। उसके सिर का घाव पक गया है, लेकिन दवा नहीं लगाती। इत्ता बड़ा घाव है, इत्ता! वह 'इत्ते' के साथ-साथ अंगुली को अँगूठे से नापकर गहराई बतलाता है।''[15] साकेत देखता है कि दिनभर मजदूरी कर हाड़तोड़ मेहनत करने वाले ये लोग अपनी कम सुख-सुविधाओं और तंग आर्थिक स्थिति के बावजूद भी संतुष्ट हैं। रात होने पर इकट्ठे होकर नाच-गाना करते हैं। जीवन को आनंद की तरह लेते हैं, तभी तो साकेत को लगता है कि 'सभ्यता और आनंद दो अलग तरह की वस्तुएँ हैं।'

यहाँ साकेत किसी निकोबारी लड़की से संपर्क में आता है जो फर्राटेदार अंग्रेजी बोल रही थी। वह लड़की भी अपनी माँ का इलाज उसी परंपरागत प्रणाली में ढूँढ़ती है। नोनो नाम की वह लड़की साकेत के संपर्क में आती है जिसे वह नीना कहकर संबोधित करता है। साकेत के बीमार पड़ जाने पर वह लड़की उसकी भली प्रकार देखभाल करती है। साकेत के साथ रहते हुए उसके जीवन में अब बदलाव दिखाई पड़ने लगता है। ''उसे आश्चर्य होता है, कुछ ही महीनों में यह लड़की कितना बदल गई है! सभ्य, सुसंस्कृत समाज के सारे गुण धीरे-धीरे इसने आत्मसात् कर लिए हैं। लगता नहीं कि यह आदिवासी भी रही होगी कभी। साफ कपड़े पहनती है। करीने से उन्हें रखती है। बालों को रोज़ सँवारती है। तरह-तरह के फूलों से सजे, 'अजन्ता टाइप' जूड़े साकेत को बहुत अच्छे लगते हैं। काले कोयले से रगड़-रगड़कर दाँत साफ करती है तो सफेद दाँतों की पंक्तियाँ मोती की तरह चमकने लगती हैं।''[16]

नीना साकेत के साथ महासागर तट से जनसागर तक की यात्रा करती है। वह उसके साथ कलकत्ता और उसके गाँव जाती है। कलकत्ता में दौड़ती मोटरें और ट्राम आदि उसके लिए आश्चर्य का विषय होते हैं। इतने लोगों को साथ देखकर उसे हैरानी होती है। साकेत के घर पहुँचने पर नीना सबके साथ घुलने-मिलने का प्रयास करती है किंतु उसकी माँ और अन्य पड़ोसियों के लिए वह चर्चा का विषय बन जाती है।

"चीटियों की कतार की तरह, एक-एक कर मोहल्ले भर की औरतें आना शुरू कर देती हैं- बच्चों को भी साथ लेकर इधर-उधर सब जगह चर्चा है कि 'कालापानी' के भयानक जंगलों से साकेत एक जंगली लड़की लाया है। लड़की की आँखें, धनुष की तरह बड़ी हैं। दाँत मोती से चमकीले, नाक-नक्श तीखे पर रंग एकदम काला। लड़की हिंदी बोल लेती है और घर का कामकाज भी जानती है। जब से घर आई है, साकेत की अम्मा ने अपना कमरा दिन में दो बार लीपना शुरू कर दिया है। गोमूत्र छिड़ककर भीतर से बंद रखती हैं। पहले दिन-भर में चार-छह बार नहाती थीं, अब तो सुना है, दिन-रात नल के नीचे ही बैठी रहती हैं। वह निमोनिया से मर पड़ी तो पाप मोहल्ले भर के लोगों के सिर चढ़ेगा!"[17] वहीं अंडमान-निकोबार क्षेत्र के आदिवासियों के विषय में हमारे समाज की क्या अवधारणा है, वह भी हम इन कथनों से समझ सकते हैं- "अरी, वहाँ तो कहे है, आदमी आदमी को खाए है! ऐसी लड़की को घर लाना खतरे से खाल्ली नहीं। सुना भैना, हमारी तिलोकी कहे है वहाँ औरत-मरद सब नंगे रहत हैं। जे कैसे रहत होगी! सब खि: खि: हँस पड़ती हैं। जे तो भी ना? किताब पै लिक्खा है कि हुँआ सब जादू-टोना जानत है। कौन जाने साकेत पै भी जादू फूंकि डारा हो...! जितने मुँह, उतनी बातें!"[18] घर वालों की स्थिति भी अजीब हो जाती है। वे हर बात को नीना के सिर फोड़ देते हैं। इस प्रकार की मानसिकता से हम समझ सकते हैं कि हमारा समाज आज भी जनजातियों को लेकर क्या मानसिकता रखता है।

साकेत के मामा का मानना कि कालापानी से कोई लौटकर नहीं आता है। जब साकेत सकुशल वापस आ जाता है तो मामाजी उसे अपने स्वयं के द्वारा करवाए गए जाप का परिणाम मानते हैं। साकेत को मिली बड़ी नौकरी और अच्छे वेतन से उसके रहन-सहन, खान-पान में आया बदलाव अब नीना और साकेत के बीच संबंधों में दूरी लाता है। घर देर से आना, शराब का सेवन आदि ऐसे कारण हैं जिनके कारण साकेत और नीना एक-दूसरे से दूर होने लगते हैं। इन्हीं सब बातों को देखते हुए दीप दीदी साकेत से कहती है कि- "तू ठीक कहता है, साकेत! उखड़ी-उखड़ी, बहकी-बहकी आवाज़ में दीप बुदबुदाती है, तुझे फुर्सत अब क्यों होने लगी रे! सुना है अब बहुत बड़ा आदमी हो गया है। बड़ी-बड़ी कारें हैं तेरे पास, बड़ी कोठी है। बड़े लोगों के साथ तेरा उठना-बैठना है। बड़े लोगों के सारे 'सद्गुण' सुना है अब तूने भी आत्मसात् कर लिए हैं! सुना है अब तू ....। याद है कभी खादी के कपड़े पहनता था! देश-सेवा की कैसी बड़ी-बड़ी बातें किया करता था। अंत में सारी सच्चाई आज इस रूप में उभरकर आई न.....! दीप का चेहरा लाल हो आता है। सांस तेज़ चलने लगती है, तेरा दोष नहीं है साकेत! लगता है, इस देश के कुएँ में ही भांग पड़ गई है!"[19] उपन्यास

के आखिर में वर्णित है कि साकेत के इस बदले व्यवहार के कारण नीना अब बीमार रहने लगती है। अंत में वह बोल पड़ती है कि भगवान के लिए मुझे वापस निकोबार भेज दो। उसकी हालत ऐसी हो जाती है कि वह न तो वहाँ ढंग से अपना जीवन जी पा रही होती है और न ही मृत्यु का वरण कर पा रही होती है।

असम, नेफा और मणिपुर के दौरे से लौटने पर नीना उसे वहाँ नहीं मिलती है। दादा बाबू के भी सारे प्रयास विफल हो जाते हैं। लोग उसकी आत्महत्या और वापस निकोबार लौटने का अनुमान लगाने लगते हैं। साकेत उसकी तलाश में वापस निकोबार जाता है और इत्तफाक से मिले पुराने जवाबदार (मेट) से नीना के बारे में पूछता है। इस पर जो जबाब उसे मिलता है, वह चौकानें वाला है। जबाबदार कहता है कि- "एक बार कुछ महीने पहले वह यहाँ दीखी तो थी। सिर के सफेद लंबे बालों पर हाथ फेरता हुआ जवाबदार कहता है, मज़दूरी के लिए हमारे जत्थे में आई थी, पर इतनी बीमार और कमजोर थी कि उसे काम कौन देता! काम मिल भी जाता तो, तब भी हो नहीं पाता उससे। तब यह नारियल और सूखी सुपारी बटोरने लगी थी। मछुआरों के झोपड़ों के पास रह लेती थी। कहते हैं, उसका एक बच्चा भी हुआ था। उसी के कुछ दिन बाद वह मरी हुई पाई गई थी। साकेत उस जगह को देखता है, जहाँ वह रहती थी। कुछ नारियल और रूखी सुपारी अब भी बिखरी पड़ी है। उसकी साड़ी का एक चिथड़ा अब तक टहनी पर लटक रहा है। निकोबारी उस जगह को दिखलाते है, जहाँ उसे दफनाया गया था। साकेत को अब भी विश्वास नहीं हो पाता क्या सचमुच वह गुजर गई है! वह उस जगह को खोदता है तो नीचे कुछ हड्डियाँ-सी बिखरी हुई मिलती हैं। उपन्यास का अंत बड़ा कारुणिक बन पड़ा है। साकेत उसके नन्हें बच्चे की पड़ताल करता है और कोई आदिवासी महिला जो उस बच्चे को पाल रही होती है, उससे अपने बच्चे को ले आता है। घर वापसी पर उसकी हालत भी ठीक नहीं रहती है। वह नौकरी पर जाना भी छोड़ देता है। नीना की याद में हर समय खोया रहता है और एक दिन वापस कहीं निकल जाता है। लोगों का अनुमान है कि वह वापस अंडमान-निकोबार की ओर चला गया है। इस प्रकार यह उपन्यास शहर की कथा होने के साथ-साथ अंडमान और निकोबार के जनजाति क्षेत्र क्षेत्र की भी कथा है।

उपन्यास यह दर्शाता है कि शहरी जीवन और जनजातीय जीवन के अपने अंतर हैं। रहन-सहन, खानपान और पहनावा अलग है किंतु जब दोनों संस्कृतियाँ आपस में संपर्क में आती है तो ऐसे में किन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना जरूरी हो जाता है, इस बात को भी रचनाकार ने दर्शाया है। एक प्रकार ये यह रचना अंडमान और

निकोबार में निवारत आदिवासियों का जीवन-सत्य और व्यथा-कथा का गान तो करती है कि साथ ही पर के लिए स्वयं के विसर्जन भाव की भी अभिव्यक्ति करती है।

संदर्भ सूची

1. https://www.aajtak.in/literature/sahiya-aaj-tak/story/himanshu-joshi-passed-away-know-about-him-573799-2018-11-23
2. https://www.hindivyakran.com/2019/11/himanshu-joshi.html
3. हिमांशु जोशी : महासागर, दो शब्द, भूमिका, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 07
4. वही, पृष्ठ 11
5. वही, पृष्ठ 12
6. वही, पृष्ठ 16
7. वही, पृष्ठ 27
8. वही, पृष्ठ 43
9. वही, पृष्ठ 56
10. वही, पृष्ठ 59
11. https://hindi.news18.com/news/knowledge/andaman-islands-tribes-know-about-jarawa-tribe-they-are-also-dangerous-like-sentinelese-1594181.html
12. हिमांशु जोशी : महासागर, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 61
13. वही, पृष्ठ 65
14. वही, पृष्ठ 67
15. वही, पृष्ठ 68
16. वही, पृष्ठ 87
17. वही, पृष्ठ 101
18. वही, पृष्ठ 102
19. वही, पृष्ठ 125

❑❑❑